

शहरीकरण, औद्योगीकरण और कामकाजी महिलाओं के लिए व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों का प्रभाव

डॉ. निधि रायजादा ¹, संजय सिंह यादव ²

¹ प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

² शोधार्थी, इतिहास विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.3.12340>

सारांश

शहरीकरण एवं औद्योगीकरण आधुनिक समाज के विकास के महत्वपूर्ण घटक हैं, जिन्होंने महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक भागीदारी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य कामकाजी महिलाओं पर व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों के प्रभाव का विश्लेषण करना है। यह शोध द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन, सरकारी रिपोर्टें, शोध पत्रों एवं विभिन्न प्रकाशित अध्ययनों से प्राप्त जानकारी का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्रों में कार्यरत महिलाएँ अनेक स्वास्थ्य समस्याओं जैसे मानसिक तनाव, मस्क्युलोस्केलेटल विकार, वसन रोग, थकान, अनिद्रा तथा कार्यस्थल दुर्घटनाओं का सामना कर रही हैं। विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं में स्वास्थ्य जोखिमों का स्तर अधिक पाया गया, क्योंकि वहाँ कार्यस्थल सुरक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं सामाजिक सुरक्षा का अभाव है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि महिलाएँ कार्यस्थल के अतिरिक्त घरेलू एवं देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करती हैं, जिसके कारण उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। लंबे कार्य घंटे, असमान वेतन, लैंगिक भेदभाव तथा असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ महिलाओं की कार्य क्षमता एवं जीवन गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कार्यस्थल संबंधी जोखिमों से मानसिक एवं शारीरिक रोगों में वृद्धि हो रही है तथा केवल सीमित संख्या में श्रमिकों को व्यावसायिक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि महिलाओं के लिए सुरक्षित एवं स्वस्थ कार्य वातावरण सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए प्रभावी श्रम नीतियाँ, स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रम, समान वेतन, सामाजिक सुरक्षा एवं महिला-अनुकूल कार्यस्थल व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

मुख्यशब्द: शहरीकरण, औद्योगीकरण, कामकाजी महिलाएँ, व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिम, मानसिक तनाव, असंगठित क्षेत्र, कार्यस्थल सुरक्षा, महिला स्वास्थ्य।

शहरीकरण एवं औद्योगीकरण आधुनिक समाज के विकास की दो प्रमुख प्रक्रियाएँ हैं, जिन्होंने वैश्विक स्तर पर आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। औद्योगिक क्रांति के पश्चात उत्पादन प्रणाली, रोजगार संरचना एवं कार्यस्थलों में तीव्र परिवर्तन हुए, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोग ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित हुए। इस परिवर्तन ने महिलाओं के जीवन में भी महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। पहले महिलाएँ मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित मानी जाती थीं, किंतु वर्तमान समय में वे कृषि, उद्योग, सेवा क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवाओं, निर्माण कार्य तथा असंगठित क्षेत्रों सहित लगभग सभी आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। महिलाओं की बढ़ती कार्य भागीदारी ने न केवल परिवारों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया है, बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। तथापि, इस बढ़ती भागीदारी के साथ महिलाओं के समक्ष अनेक व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिम भी उत्पन्न हुए हैं, जो उनके शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार व्यावसायिक स्वास्थ्य का उद्देश्य कार्यस्थल पर श्रमिकों के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक कल्याण को सुरक्षित रखना तथा कार्यस्थल संबंधी जोखिमों को कम करना है। कार्यस्थल पर धूल, धुआँ, रसायन, शोर, अत्यधिक तापमान, लंबे कार्य घंटे, मानसिक दबाव एवं असुरक्षित वातावरण जैसे कारक विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक रोगों एवं दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार विश्व के केवल लगभग श्रमिकों को ही विशेष व्यावसायिक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हैं, जबकि अधिकांश श्रमिक, विशेष रूप से असंगठित

क्षेत्र के श्रमिक, स्वास्थ्य सुरक्षा से वंचित रहते हैं। (सारागिह और इका करयाती, 2010)

भारत जैसे विकासशील देशों में शहरीकरण एवं औद्योगीकरण की प्रक्रिया अत्यंत तीव्र गति से बढ़ रही है। शहरों में उद्योगों, सेवा क्षेत्रों एवं तकनीकी संस्थानों के विस्तार के कारण महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। शिक्षा के प्रसार, आर्थिक आवश्यकताओं तथा सामाजिक परिवर्तन के कारण महिलाएँ अब पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलकर विभिन्न पेशों में कार्य कर रही हैं। इसके बावजूद महिलाओं को कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव, असमान वेतन, असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ, यौन उत्पीड़न, मानसिक तनाव तथा दोहरी जिम्मेदारियों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाएँ अधिक जोखिमपूर्ण परिस्थितियों में कार्य करती हैं, जहाँ श्रम कानूनों का पालन सीमित होता है तथा स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधाएँ अपर्याप्त होती हैं। (रज़ाफिमाहेफा एट अल., 2022)

असंगठित क्षेत्र भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें घरेलू कार्य, कृषि, निर्माण कार्य, सड़क विक्रय, बीड़ी निर्माण, कचरा संग्रहण, घरेलू उद्योग एवं छोटे उत्पादन कार्य शामिल हैं। विभिन्न अध्ययनों के अनुसार भारत में लगभग 93 कार्यबल अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है तथा महिलाओं की भागीदारी इसमें 95 से अधिक है। असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाएँ लंबे कार्य घंटे, कम वेतन, सामाजिक सुरक्षा के अभाव, अस्वास्थ्यकर वातावरण तथा सुरक्षा उपकरणों की कमी जैसी समस्याओं से प्रभावित होती हैं। इन परिस्थितियों के कारण उनमें मस्क्युलोस्केलेटल विकार, वसन रोग, त्वचा रोग, आँखों की

समस्याएँ, मानसिक तनाव तथा थकान जैसी स्वास्थ्य समस्याएँ सामान्य रूप से पाई जाती हैं। (प्रिया, 2020)

शहरीकरण का प्रभाव केवल रोजगार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं के जीवन-स्तर, जीवनशैली एवं स्वास्थ्य व्यवहार को भी प्रभावित करता है। शहरी क्षेत्रों में तेज प्रतिस्पर्धा, बढ़ती जीवन-यापन लागत, समय की कमी एवं सामाजिक दबाव महिलाओं में मानसिक तनाव एवं चिंता को बढ़ाते हैं। आधुनिक शहरी जीवन में महिलाओं को कार्यस्थल एवं घरेलू जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखना पड़ता है। अधिकांश महिलाएँ कार्यस्थल पर पूर्ण समय कार्य करने के अतिरिक्त घरेलू कार्यों एवं परिवार की देखभाल का दायित्व भी निभाती हैं। यह दोहरी जिम्मेदारी उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न करती है। डब्ल्यूएचओ और आईएलओ के अनुसार मानसिक तनाव, अवसाद एवं चिंता आज कार्यस्थल संबंधी प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं में शामिल हैं। (वी, 2025)

औद्योगिक क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं को विभिन्न प्रकार के भौतिक एवं रासायनिक जोखिमों का सामना करना पड़ता है। फैक्ट्री एवं निर्माण कार्यों में कार्यरत महिलाएँ धूल, धुएँ, जहरीले रसायनों, मशीनों के शोर एवं अत्यधिक तापमान के संपर्क में रहती हैं। इन परिस्थितियों के कारण वसन रोग, त्वचा संक्रमण, श्रवण क्षमता में कमी तथा हड्डी एवं मांसपेशियों से संबंधित विकार उत्पन्न हो सकते हैं। लंबे समय तक एक ही स्थिति में कार्य करने से पीठ दर्द, गर्दन दर्द एवं जोड़ों की समस्याएँ बढ़ती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कार्यस्थल पर उत्पन्न स्वास्थ्य जोखिमों के कारण मस्कुलोस्केलेटल विकार एवं वसन रोग विश्व स्तर पर प्रमुख व्यावसायिक रोगों में शामिल हैं। (विश्व स्वास्थ्य संगठन), 2022)

महिलाओं के स्वास्थ्य पर सामाजिक एवं लैंगिक कारकों का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। पारंपरिक सामाजिक संरचना में महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे घरेलू कार्यों एवं परिवार की देखभाल की मुख्य जिम्मेदारी निभाएँ। परिणामस्वरूप कार्यरत महिलाएँ कार्यस्थल एवं परिवार दोनों की जिम्मेदारियों के कारण अत्यधिक मानसिक एवं शारीरिक दबाव का अनुभव करती हैं। इसके अतिरिक्त कई क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन प्राप्त होता है तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सीमित रहती है। लैंगिक असमानता एवं सामाजिक भेदभाव महिलाओं के आत्मविश्वास, मानसिक स्वास्थ्य एवं कार्य संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की "लिंग, कार्य और स्वास्थ्य" रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि महिलाओं की कार्य परिस्थितियों एवं स्वास्थ्य समस्याओं पर अपेक्षाकृत कम शोध हुआ है तथा उनकी समस्याएँ अक्सर उपेक्षित रह जाती हैं। (कर, 2025)

वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी एवं सेवा क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ी है। इन क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं को लंबे समय तक कंप्यूटर के सामने बैठकर कार्य करना पड़ता है, जिससे आँखोंकी समस्या, गर्दन एवं कमर दर्द, तनाव तथा नींद संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं। कॉर्पोरेट क्षेत्र में लक्ष्य-आधारित कार्य संस्कृति एवं प्रतिस्पर्धा मानसिक दबाव को और अधिक बढ़ाती है। रात्रिकालीन शिफ्टों में कार्य करने वाली महिलाओं में जैविक घड़ी प्रभावित होने के कारण अनिद्रा, हार्मोनल असंतुलन एवं मानसिक तनाव की समस्या अधिक देखी जाती है। (पन्नीर, 2019)

इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य सेवाओं में कार्यरत महिलाओं, विशेषकर नर्सों एवं स्वास्थ्य कर्मियों, को संक्रमण, मानसिक दबाव एवं कार्य थकान का सामना करना पड़ता है। महामारी एवं आपातकालीन परिस्थितियों में इन महिलाओं पर कार्यभार और अधिक बढ़ जाता है। इसी प्रकार निर्माण क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को भारी वजन उठाने, धूल एवं असुरक्षित मशीनों के कारण गंभीर स्वास्थ्य

जोखिमों का सामना करना पड़ता है। कृषि क्षेत्र में कार्यरत महिलाएँ कीटनाशकों एवं रासायनिक उर्वरकों के संपर्क में रहती हैं, जो उनके वसन एवं प्रजनन स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। (मिश्रा एट अल., 2024)

व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिम केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनका सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव भी व्यापक होता है। कार्यस्थल संबंधी रोग एवं दुर्घटनाएँ श्रमिकों की कार्य क्षमता को कम करती हैं, जिससे उत्पादकता प्रभावित होती है तथा परिवार की आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कार्यस्थल संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं के कारण अधिकांश देशों को सकल घरेलू उत्पाद का 4-6 तक आर्थिक नुकसान होता है। विशेष रूप से महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने से परिवार के बच्चों एवं अन्य सदस्यों के स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है। इसलिए महिलाओं के व्यावसायिक स्वास्थ्य की सुरक्षा केवल व्यक्तिगत आवश्यकता नहीं, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए भी अनिवार्य है। (गेनुलिना एट अल., 2024)

वर्तमान अध्ययन "शहरीकरण, औद्योगीकरण और कामकाजी महिलाओं के लिए व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों का प्रभाव" इसी संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं, कार्य परिस्थितियों एवं जोखिम कारकों का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं के व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों की पहचान करना, उनके शारीरिक एवं मानसिक प्रभावों को समझना तथा कार्य परिस्थितियों में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की समस्याओं को उजागर करने का प्रयास करता है, क्योंकि यह वर्ग स्वास्थ्य सुरक्षा एवं सामाजिक संरक्षण से सर्वाधिक वंचित है। अतः यह आवश्यक है कि सरकार, उद्योग, स्वास्थ्य संस्थाएँ एवं समाज मिलकर महिलाओं के लिए सुरक्षित एवं स्वस्थ कार्य वातावरण सुनिश्चित करें। कार्यस्थलों पर सुरक्षा उपकरणों की उपलब्धता, नियमित स्वास्थ्य जाँच, मानसिक स्वास्थ्य सहायता, समान वेतन, मातृत्व लाभ, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ तथा महिला-अनुकूल श्रम नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाना चाहिए। साथ ही महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने एवं कार्यस्थल सुरक्षा के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की आवश्यकता है। सुरक्षित एवं स्वस्थ कार्य वातावरण न केवल महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाएगा, बल्कि राष्ट्रीय उत्पादकता एवं सतत विकास को भी प्रोत्साहित करेगा। (सेनगुप्ता एट अल., 2025)

2. अध्ययन के उद्देश्य

- शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण महिलाओं के कार्यस्थल में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
- कामकाजी महिलाओं के व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों की पहचान करना।
- स्वास्थ्य जोखिमों के शारीरिक एवं मानसिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
- महिलाओं की कार्य परिस्थितियों में सुधार हेतु सुझाव देना।

3. शोध पद्धति

1. अनुसंधान की प्रकृति

यह अध्ययन "शहरीकरण, औद्योगीकरण और कामकाजी महिलाओं के लिए व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों का प्रभाव" विषय पर आधारित एक द्वितीयक आँकड़ा शोध है। इस शोध का उद्देश्य शहरी एवं औद्योगिक विकास के कारण कार्यरत महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है। अध्ययन में कार्यस्थल पर उत्पन्न शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक

स्वास्थ्य जोखिमों का विश्लेषण किया। यह शोध मुख्यतः उपलब्ध साहित्य, सरकारी रिपोर्टें तथा पूर्व प्रकाशित शोध अध्ययनों पर आधारित है।

2. अनुसंधान डिज़ाइन

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध डिज़ाइन पर आधारित है। वर्णनात्मक शोध के माध्यम से कामकाजी महिलाओं के स्वास्थ्य जोखिमों, कार्य परिस्थितियों तथा शहरीकरण एवं औद्योगीकरण से उत्पन्न समस्याओं का वर्णन किया। वहीं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण द्वारा इन समस्याओं के कारणों एवं उनके प्रभावों का विश्लेषण किया।

3. डेटा के स्रोत

इस शोध में केवल द्वितीयक स्रोतों से डेटा एकत्र किया। डेटा संग्रहण के लिए विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी रिपोर्टें, शोध पत्रों, पुस्तकों, जर्नलों तथा ऑनलाइन डेटाबेस का उपयोग किया। विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, जनगणना रिपोर्ट तथा महिला स्वास्थ्य से संबंधित प्रकाशित अध्ययनों को प्रमुख स्रोत के रूप में शामिल किया है। इसके अतिरिक्त समाचार पत्रों, शोध वेबसाइटों एवं ई-लाइब्रेरी से भी प्रासंगिक जानकारी प्राप्त की है।

4. अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन मुख्य रूप से शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं तक सीमित है। अध्ययन में फैक्ट्री, कॉर्पोरेट सेक्टर, स्वास्थ्य सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र तथा असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं के व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों का विश्लेषण किया। इसमें कार्यस्थल पर तनाव, लंबे कार्य घंटे, रासायनिक पदार्थों के संपर्क, शारीरिक थकान तथा मानसिक दबाव जैसे पहलुओं का अध्ययन शामिल है।

5. डेटा संग्रहण की विधि

द्वितीयक आँकड़ों के संग्रहण हेतु साहित्य समीक्षा की विधि अपनाई। विभिन्न शोध लेखों, जर्नलों, सरकारी दस्तावेजों तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्टों का अध्ययन करके आवश्यक जानकारी संकलित की। ऑनलाइन डेटाबेस जैसे गूगल स्कॉलर, रिसर्चगेट, जेएसटीओआर तथा अन्य अकादमिक स्रोतों से विषय संबंधित सामग्री एकत्र की। संकलित डेटा को व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत एवं संक्षिप्त किया ताकि अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।

6. डेटा विश्लेषण की विधि

संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति द्वारा किया। विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न शोध अध्ययनों एवं रिपोर्टों से प्राप्त तथ्यों की तुलना की। आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय आँकड़ों, प्रतिशतों एवं तालिकाओं का उपयोग करके डेटा को प्रस्तुत किया। इसके माध्यम से शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को स्पष्ट रूप से समझाया है।

7. अध्ययन की सीमाएँ

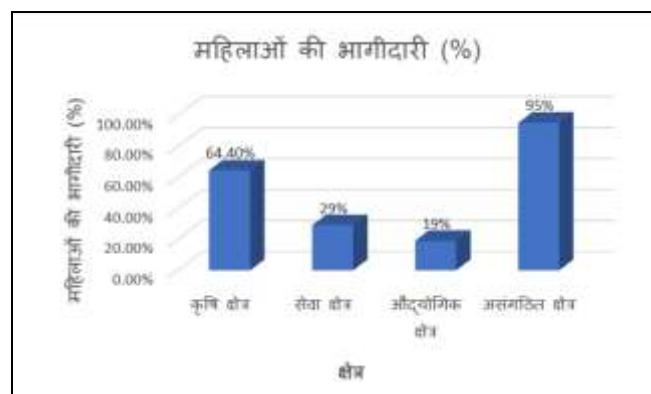
- अध्ययन केवल द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित होगा।
- कुछ आँकड़े अद्यतन या पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं हो सकते।
- अध्ययन विशेष रूप से शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्रों तक सीमित रहेगा।

4. परिणाम

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि शहरीकरण एवं औद्योगीकरण ने महिलाओं की कार्य भागीदारी को बढ़ाया है, परंतु इसके साथ व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों में भी वृद्धि हुई है। विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाएँ लंबे कार्य घंटे, असुरक्षित कार्य परिस्थितियों, मानसिक तनाव, प्रदूषण तथा सामाजिक असमानताओं के कारण अधिक प्रभावित होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं विभिन्न शोध अध्ययनों के अनुसार महिलाओं में मस्क्युलोस्केलेटल विकार, वसन रोग, मानसिक तनाव, त्वचा रोग तथा कार्यस्थल दुर्घटनाएँ प्रमुख स्वास्थ्य समस्याएँ हैं। (विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), 2022)

तालिका 1: भारत में महिला कार्य बल की क्षेत्रीय भागीदारी

क्षेत्र	महिलाओं की भागीदारी (प्रतिशत)
कृषि क्षेत्र	64.4 प्रतिशत
सेवा क्षेत्र	29 प्रतिशत
औद्योगिक क्षेत्र	19 प्रतिशत
असंगठित क्षेत्र	95 प्रतिशत से अधिक

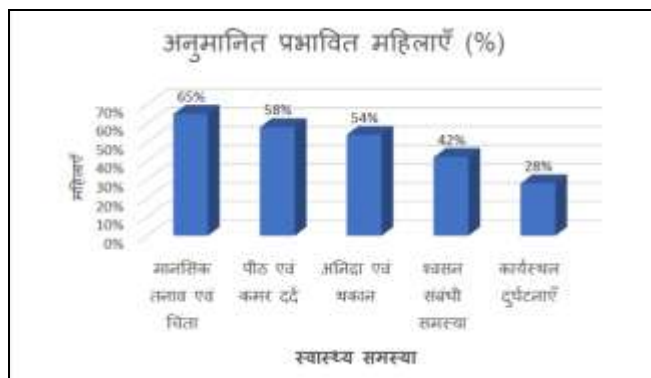


चित्र 1: भारत में महिला कार्यबल की क्षेत्रीय भागीदारी

तालिका 1 एवं चित्र 1 से स्पष्ट होता है कि भारत में महिला कार्यबल की सबसे अधिक भागीदारी कृषि एवं असंगठित क्षेत्रों में पाई जाती है। लगभग 64.4 प्रतिशत महिलाएँ कृषि क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वहीं सेवा क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी 29 प्रतिशत तथा औद्योगिक क्षेत्र में 19 प्रतिशत है, जो यह दर्शाता है कि आधुनिक शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्रों में भी महिलाओं की उपस्थिति धीरे-धीरे बढ़ रही है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि 95 प्रतिशत से अधिक महिलाएँ असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं, जहाँ सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ एवं श्रम संरक्षण की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होती। इससे महिलाओं को लंबे कार्य घंटे, कम वेतन, असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ तथा स्वास्थ्य जोखिमों का अधिक सामना करना पड़ता है। यह स्थिति महिला श्रमिकों के लिए बेहतर कार्य सुरक्षा एवं सामाजिक संरक्षण की आवश्यकता को दर्शाती है। (शेठ एट अल., 2026)

तालिका 2: कामकाजी महिलाओं में प्रमुख स्वास्थ्य समस्याएँ

स्वास्थ्य समस्या	अनुमानित प्रभावित महिलाएँ (प्रतिशत)
मानसिक तनाव एवं चिंता	60 – 65 प्रतिशत
पीठ एवं कमर दर्द	58 प्रतिशत
अनिद्रा एवं थकान	54 प्रतिशत
वसन संबंधी समस्या	42 प्रतिशत
कार्यस्थल दुर्घटनाएँ	28 प्रतिशत

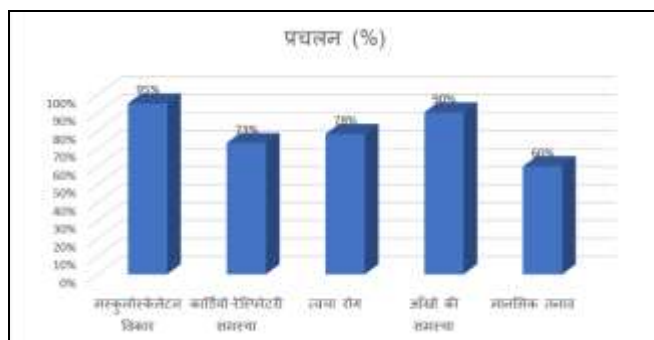


चित्र 2: कामकाजी महिलाओं में प्रमुख स्वास्थ्य समस्याएँ

तालिका 2 एवं चित्र 2 से यह स्पष्ट होता है कि कामकाजी महिलाओं में मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। अध्ययन के अनुसार लगभग 60–65 प्रतिशत महिलाएँ मानसिक तनाव एवं चिंता से प्रभावित हैं, जो कार्यस्थल के दबाव, लंबे कार्य घंटे तथा घरेलू जिम्मेदारियों के कारण उत्पन्न होता है। लगभग 58 प्रतिशत महिलाओं में पीठ एवं कमर दर्द की समस्या पाई गई, जो लंबे समय तक बैठकर या शारीरिक श्रम करने के कारण होती है। इसके अतिरिक्त 54 प्रतिशत महिलाएँ अनिद्रा एवं अत्यधिक थकान से प्रभावित हैं, जिससे उनकी कार्य क्षमता एवं जीवन गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लगभग 42 प्रतिशत महिलाओं में वसन संबंधी समस्याएँ पाई गई, जो प्रदूषण, धूल एवं रासायनिक पदार्थों के संपर्क के कारण उत्पन्न होती हैं। वहीं 28 प्रतिशत महिलाएँ कार्यस्थल दुर्घटनाओं का शिकार होती हैं। यह स्थिति महिलाओं के लिए सुरक्षित एवं स्वास्थ्य-अनुकूल कार्य वातावरण की आवश्यकता को दर्शाती है। (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2022)

तालिका 3: असंगठित क्षेत्र की महिलाओं में स्वास्थ्य जोखिम

स्वास्थ्य समस्या	प्रचलन (प्रतिशत)
मस्कुलोस्केलेटल विकार	89–95 प्रतिशत
कार्डियोदृरेस्पिरैटरी समस्या	लगभग 73 प्रतिशत
त्वचा रोग	32–78 प्रतिशत
आँखों की समस्या	45–90 प्रतिशत
मानसिक तनाव	लगभग 60 प्रतिशत



चित्र 3: असंगठित क्षेत्र की महिलाओं में स्वास्थ्य जोखिम

तालिका 3 एवं चित्र 3 से स्पष्ट होता है कि असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाएँ गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों का सामना कर रही हैं। अध्ययन के अनुसार मस्कुलोस्केलेटल विकारों का प्रचलन सबसे अधिक 89–95 प्रतिशत पाया गया, जो भारी शारीरिक कार्य, लंबे समय तक एक ही स्थिति में कार्य करने तथा उचित कार्य सुविधाओं के अभाव के कारण उत्पन्न होता है। लगभग 73 प्रतिशत महिलाओं में कार्डियो-रेस्पिरैटरी समस्याएँ पाई गई, जो धूल, धुएँ एवं प्रदूषित वातावरण के संपर्क से संबंधित हैं। त्वचा

रोगों का प्रचलन 32–78 प्रतिशत तथा आँखों की समस्याएँ 45–90 प्रतिशत तक पाई गई, जो रसायनों, धूल एवं असुरक्षित कार्य परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होती हैं। इसके अतिरिक्त लगभग 60 प्रतिशत महिलाएँ मानसिक तनाव से प्रभावित हैं, जिसका मुख्य कारण आर्थिक असुरक्षा, लंबे कार्य घंटे एवं दोहरी जिम्मेदारियों हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि असंगठित क्षेत्र में स्वास्थ्य सुरक्षा एवं कार्यस्थल सुविधाओं की अत्यंत आवश्यकता है। (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2022)

तालिका 4: कार्यस्थल पर जोखिम के प्रमुख कारण

स्वास्थ्य समस्या	प्रचलन (प्रतिशत)
मस्कुलोस्केलेटल विकार	89–95 प्रतिशत
कार्डियोदृरेस्पिरैटरी समस्या	लगभग 73 प्रतिशत
त्वचा रोग	32–78 प्रतिशत
आँखों की समस्या	45–90 प्रतिशत
मानसिक तनाव	लगभग 60 प्रतिशत

तालिका 4 से यह स्पष्ट होता है कि कार्यस्थल पर उपस्थित विभिन्न जोखिम कारक महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। लंबे कार्य घंटे महिलाओं में तनाव, थकान एवं कार्य क्षमता में कमी का प्रमुख कारण बनते हैं। रासायनिक पदार्थों के संपर्क से वसन संबंधी रोग, त्वचा संक्रमण तथा एलर्जी जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। खराब कार्य वातावरण, जैसे अपर्याप्त प्रकाश, असुरक्षित मशीनें एवं स्वच्छता की कमी, कार्यस्थल दुर्घटनाओं एवं शारीरिक चोटों की संभावना को बढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त महिलाएँ कार्यस्थल के साथ-साथ घरेलू एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करती हैं, जिससे उन पर मानसिक दबाव अधिक बढ़ जाता है। सुरक्षा उपकरणों एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण स्वास्थ्य जोखिम और अधिक गंभीर हो जाते हैं। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि महिलाओं के लिए सुरक्षित, स्वच्छ एवं स्वास्थ्य-अनुकूल कार्य वातावरण सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि उनके स्वास्थ्य एवं कार्य क्षमता की सुरक्षा की जा सके।

तालिका 5: विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की कार्य परिस्थितियाँ

कार्य क्षेत्र	प्रमुख समस्या
निर्माण कार्य	शारीरिक चोट एवं हड्डी संबंधी समस्या
घरेलू कार्य	मानसिक तनाव एवं थकान
कृषि कार्य	कीटनाशक एवं रसायनों का प्रभाव
फैक्ट्री कार्य	वसन एवं श्रवण समस्या
स्वास्थ्य सेवाएँ	संक्रमण एवं मानसिक दबाव

तालिका 5 से स्पष्ट होता है कि विभिन्न कार्य क्षेत्रों में महिलाओं को अलग-अलग प्रकार की व्यावसायिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। निर्माण कार्य में कार्यरत महिलाएँ भारी वजन उठाने, असुरक्षित उपकरणों एवं कठिन शारीरिक श्रम के कारण शारीरिक चोट एवं हड्डी संबंधी समस्याओं से अधिक प्रभावित होती हैं। घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं में लंबे समय तक निरंतर कार्य एवं दोहरी जिम्मेदारियों के कारण मानसिक तनाव एवं थकान की समस्या सामान्य रूप से पाई जाती है। कृषि क्षेत्र में महिलाएँ कीटनाशकों एवं रासायनिक पदार्थों के संपर्क में रहती हैं, जिससे वसन, त्वचा एवं अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। फैक्ट्री कार्यों में धूल, धुआँ एवं मशीनों के शोर के कारण वसन एवं श्रवण संबंधी समस्याएँ बढ़ती हैं। वहीं स्वास्थ्य सेवाओं में कार्यरत महिलाओं को संक्रमण के खतरे एवं अत्यधिक मानसिक दबाव का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति दर्शाती है कि प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के लिए विशेष स्वास्थ्य सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है। (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2022)

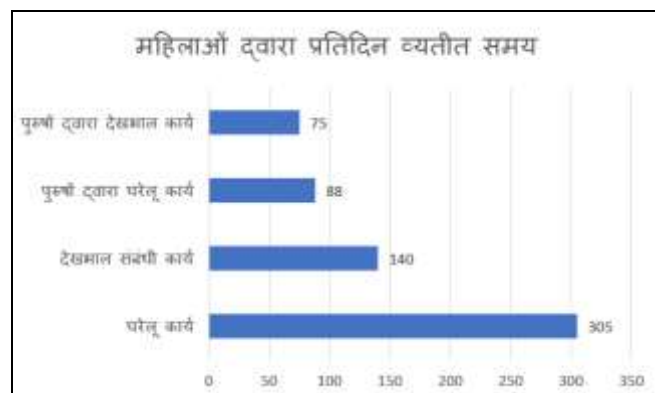
तालिका 6: लंबे कार्य घंटों का स्वास्थ्य पर प्रभाव

कार्य घंटे	स्वास्थ्य प्रभाव
8-10 घंटे	सामान्य थकान
10-12 घंटे	तनाव एवं नींद की कमी
12 घंटे से अधिक	हृदय रोग एवं अवसाद का खतरा

तालिका 6 से स्पष्ट होता है कि कार्य घंटों में वृद्धि के साथ महिलाओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव भी बढ़ता जाता है। 8-10 घंटे तक कार्य करने वाली महिलाओं में सामान्य थकान की समस्या पाई जाती है, जो लंबे समय तक कार्य करने एवं पर्याप्त विश्राम न मिलने के कारण उत्पन्न होती है। जब कार्य अवधि 10-12 घंटे तक पहुँच जाती है, तब महिलाओं में मानसिक तनाव, चिंता तथा नींद की कमी जैसी समस्याएँ अधिक दिखाई देती हैं, जिससे उनकी कार्य क्षमता एवं मानसिक संतुलन प्रभावित होता है। 12 घंटे से अधिक कार्य करने पर स्वास्थ्य जोखिम और अधिक गंभीर हो जाते हैं तथा हृदय रोग, उच्च रक्तचाप एवं अवसाद जैसी समस्याओं की संभावना बढ़ जाती है। लगातार लंबे समय तक कार्य करने से महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर अत्यधिक दबाव पड़ता है। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि संतुलित कार्य घंटे एवं पर्याप्त विश्राम महिलाओं के स्वास्थ्य संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2022)

तालिका 7: महिलाओं की घरेलू एवं कार्य जिम्मेदारियाँ

गतिविधि	महिलाओं द्वारा प्रतिदिन व्यतीत समय
घरेलू कार्य	305 मिनट
देखभाल संबंधी कार्य	137-140 मिनट
पुरुषों द्वारा घरेलू कार्य	88 मिनट
पुरुषों द्वारा देखभाल कार्य	74-75 मिनट

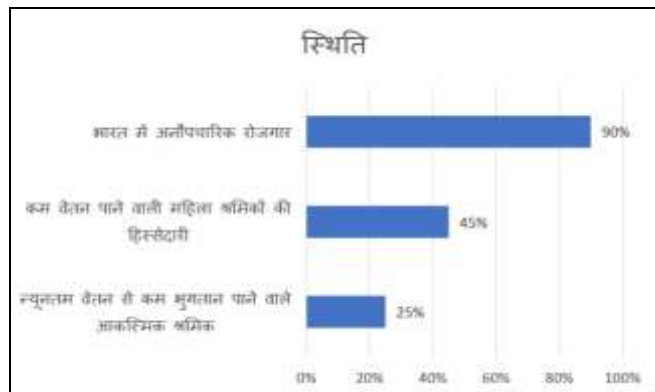


चित्र 4: महिलाओं की घरेलू एवं कार्य जिम्मेदारियाँ

तालिका 7 एवं चित्र 4 से स्पष्ट होता है कि महिलाएँ घरेलू एवं देखभाल संबंधी कार्यों में पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक समय व्यतीत करती हैं। अध्ययन के अनुसार महिलाएँ प्रतिदिन लगभग 305 मिनट घरेलू कार्यों में तथा 137-140 मिनट देखभाल संबंधी कार्यों में लगाती हैं, जबकि पुरुष घरेलू कार्यों में केवल 88 मिनट एवं देखभाल कार्यों में लगभग 74-75 मिनट व्यतीत करते हैं। यह अंतर दर्शाता है कि कार्यरत महिलाओं पर दोहरी जिम्मेदारियों का बोझ अधिक है, क्योंकि उन्हें कार्यस्थल के साथ-साथ परिवार एवं घर की जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करना पड़ता है। लगातार अधिक कार्यभार के कारण महिलाओं में मानसिक तनाव, शारीरिक थकान, अनिद्रा एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की संभावना बढ़ जाती है। यह स्थिति लैंगिक असमानता को भी दर्शाती है तथा महिलाओं के लिए कार्य-जीवन संतुलन एवं सामाजिक समर्थन की आवश्यकता को स्पष्ट करती है। (रेडिट, 2026)

तालिका 8: श्रम एवं वेतन असमानता की स्थिति

संकेतक	स्थिति
न्यूनतम वेतन से कम भुगतान पाने वाले आकस्मिक श्रमिक	25 प्रतिशत
कम वेतन पाने वाली महिला श्रमिकों की हिस्सेदारी	45 प्रतिशत
भारत में अनौपचारिक रोजगार	80-90 प्रतिशत



चित्र 5: श्रम एवं वेतन असमानता की स्थिति

तालिका 8 एवं चित्र 5 से स्पष्ट होता है कि भारत में महिलाओं को श्रम एवं वेतन असमानता की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ता है। अध्ययन के अनुसार लगभग 25 प्रतिशत आकस्मिक श्रमिकों को न्यूनतम वेतन से भी कम भुगतान प्राप्त होता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति एवं जीवन स्तर प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त कम वेतन पाने वाली महिला श्रमिकों की हिस्सेदारी लगभग 45 प्रतिशत पाई गई, जो कार्यस्थलों पर लैंगिक वेतन असमानता को दर्शाती है। भारत में 80-90 प्रतिशत रोजगार अनौपचारिक क्षेत्र में होने के कारण अधिकांश महिला श्रमिक सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं स्थायी रोजगार से वंचित रहती हैं। असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को कम वेतन, असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ एवं श्रम अधिकारों की कमी जैसी समस्याओं का अधिक सामना करना पड़ता है। यह स्थिति महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा एवं सामाजिक विकास के लिए चुनौती प्रस्तुत करती है तथा समान वेतन एवं श्रम सुरक्षा नीतियों की आवश्यकता को स्पष्ट करती है। (रेडिट, 2026)

चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरीकरण एवं औद्योगीकरण ने महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि की है, परंतु इसके साथ व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि कार्यस्थल पर लंबे कार्य घंटे, असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ, मानसिक तनाव, रासायनिक पदार्थों का संपर्क तथा दोहरी जिम्मेदारियाँ महिलाओं के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही हैं। विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की स्थिति अधिक चिंताजनक पाई गई, क्योंकि अधिकांश महिलाओं को स्वास्थ्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा तथा उचित श्रम सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्टों के अनुसार कार्यस्थल संबंधी जोखिमों के कारण विश्व स्तर पर लाखों लोग विभिन्न रोगों एवं दुर्घटनाओं से प्रभावित होते हैं तथा महिलाएँ मानसिक तनाव, मस्कुलोस्केलेटल विकार, वसन समस्याओं और थकान जैसी समस्याओं का अधिक सामना करती हैं। भारत में लगभग 93% कार्यबल अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है तथा महिलाओं की भागीदारी इसमें 95 से अधिक है, जिससे उनकी स्वास्थ्य संवेदनशीलता और बढ़ जाती है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि महिलाएँ कार्यस्थल के अतिरिक्त घरेलू एवं देखभाल संबंधी कार्यों में भी अधिक समय व्यतीत करती हैं, जिसके कारण उनके शारीरिक एवं

मानसिक स्वास्थ्य पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। औद्योगिक एवं शहरी कार्यस्थलों पर सुरक्षा उपकरणों की कमी, लैंगिक असमानता, कम वेतन तथा सामाजिक समर्थन के अभाव के कारण महिलाओं की कार्य क्षमता एवं जीवन गुणवत्ता प्रभावित होती है। इस प्रकार यह अध्ययन दर्शाता है कि केवल रोजगार के अवसर बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि महिलाओं के लिए सुरक्षित, स्वस्थ एवं समान कार्य वातावरण सुनिश्चित करना भी अत्यंत आवश्यक है। इसलिए सरकार एवं उद्योगों को महिला-अनुकूल श्रम नीतियों, स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रमों, कार्यस्थल सुरक्षा उपायों तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू करने की आवश्यकता है ताकि महिलाओं के व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों को कम किया जा सके। (साहू, 2024) (एम. एट अल., 2025) (पटांगिया एट अल., 2023)

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरीकरण एवं औद्योगीकरण ने महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक भागीदारी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परंतु इसके साथ व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिमों में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आधुनिक औद्योगिक एवं शहरी कार्यस्थलों पर महिलाओं को लंबे कार्य घंटे, मानसिक तनाव, प्रदूषण, रासायनिक पदार्थों के संपर्क, असुरक्षित कार्य वातावरण तथा दोहरी जिम्मेदारियों जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अध्ययन में यह पाया गया कि विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाएँ स्वास्थ्य जोखिमों से अधिक प्रभावित होती हैं, क्योंकि वहाँ सुरक्षा उपकरणों, स्वास्थ्य सेवाओं तथा सामाजिक सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होती। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कार्यस्थल संबंधी जोखिमों के कारण मस्कुलोस्केलेटल विकार, वसन रोग, मानसिक तनाव, दुर्घटनाएँ तथा अन्य व्यावसायिक रोगों में वृद्धि हो रही है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि महिलाएँ कार्यस्थल के अतिरिक्त घरेलू एवं देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों का निर्वहन भी करती हैं, जिससे उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। कम वेतन, लैंगिक असमानता तथा सुरक्षित कार्य परिस्थितियों की कमी महिलाओं की कार्य क्षमता एवं जीवन गुणवत्ता को प्रभावित करती है। विशेष रूप से स्वास्थ्य, निर्माण, कृषि एवं असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं में व्यावसायिक रोगों की संभावना अधिक पाई गई। अतः यह आवश्यक है कि सरकार, उद्योग एवं समाज मिलकर महिलाओं के लिए सुरक्षित एवं स्वस्थ कार्य वातावरण सुनिश्चित करें। कार्यस्थलों पर सुरक्षा मानकों का पालन, स्वास्थ्य जाँच सुविधाएँ, समान वेतन, मातृत्व लाभ, मानसिक स्वास्थ्य सहायता तथा महिला-अनुकूल श्रम नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाना चाहिए। साथ ही महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार, महिलाओं के व्यावसायिक स्वास्थ्य की सुरक्षा न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए भी अनिवार्य है।

संदर्भ सूची

- गेनुल्लीना, एम. के., वलीवा, ई. टी., करमोवा, एल. एम., सफीन, वी. एफ., और करीमोवा, एफ. (2024). नुकसानदायक वर्किंग कंडीशन वाले इंडस्ट्री में काम करने वाली महिलाओं के लिए ऑक्यूपेशनल हेल्थ रिस्क। मेडिट्सिना ट्रूडा आई प्रोमिशलेनाया इकोलोजिया। <https://doi-org/10.31089/1026-9428-2024-64-3-182-188>
- कर, एस. (2025). भारत में धर्म और महिला लेबर फोर्स पार्टिसिपेशन। डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स की समीक्षा। <https://doi-org/10.1111/तवकम.13154>
- एम. आई., एन. एस., एन. सरवर, आर., और बी. एन. (2025). बेंगलुरु शहरी क्षेत्र में गारमेंट फैक्ट्रियों में काम करने वाली रिप्रोडक्टिव एज ग्रुप की महिलाओं में एनीमिया का फैलावर एक क्रॉस-सेक्शनल स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्प्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ। <https://doi-org/10.18203/2394-6040.ijcmph20253270>
- मिश्रा, एस., भगत, डी., और बोरा, एस. (2024). एग्रीकल्चरल इंडस्ट्रीज में शामिल महिला वर्कर्स की ऑक्यूपेशनल हेल्थ पर एर्गोनॉमिक स्टडीज़रु एक सिस्टमैटिक रिव्यू। वर्ल्ड एग्रीकल्चरल इकोनॉमी पर रिसर्च। <https://doi-org/10.36956/तून.अप4.1207>
- पन्नीर, एस. (2019). इनफॉर्मल सेक्टर में महिला वर्कर्स की हेल्थ और सेप्टीरु भारत में कंस्ट्रक्शन और बीडी रोलिंग वर्कर्स से सबूत। भारत में इनफॉर्मल सेक्टर में वर्कर्स की हेल्थ, सेप्टी और वेलदबीइंग में। <https://doi-org/10.1007/978-981-13-8421-9-6>
- पटांगिया, बी., साथियासीलन, ए., डायस, एन. एस., और अश्विनी, एम. (2023). भारत में मैनुफैक्चरिंग सेक्टर में काम करने वाली महिलाओं की रिप्रोडक्टिव हेल्थ पर असर डालने वाले ऑक्यूपेशनल, एनवायरनमेंटल और साइकोसोशल फैक्टररु एक सिस्टमैटिक रिव्यू लाइफ़ रिसर्च-<https://doi-org/10.53388/स20230007>
- प्रिया, एस. (2020). अनदूर्गनाइजूड सेक्टर में काम करने वाली महिलाओं के ऑक्यूपेशनल हेल्थ के खतरे। इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ बिजनेस एंड इकोनॉमिक्स-<https://doi-org/10.56902/पतइम.2020.4.2.27>
- रजाफिमाहेणा, आर. एच., परदोसी, जे. एफ., और साव, ए. (2022). ऑयल, गैस और माइनिंग इंडस्ट्री में महिला वर्कर्स के सेक्सुअल और रिप्रोडक्टिव हेल्थ नतीजों पर असर डालने वाले ऑक्यूपेशनल फैक्टर एक स्कोपिंग रिव्यू। पब्लिक हेल्थ रिव्यूज़ में। <https://doi-org/10-3389/phrs-2022-1604653>
- रेडिट. (2026). सभी G20 देशों में भारत में लेबर वर्कफोर्स में महिलाओं की भागीदारी सबसे कम क्यों है? Reddit-Com-<https://www-reddit-com/r/AskIndianMen/comments/1p8qp55/why-is-at-he&womans&participation&in&labor>
- साहू, एस. (2024). भारत में माइग्रेंट ईट भट्टा मजदूरों का खतरनाक काम, रोजी-रोटी का दबाव और हेल्थ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ माइग्रेशन, हेल्थ एंड सोशल केयर। <https://doi-org/10-1108/IJMHSC&06&2023&0057>
- सरगिद, बी., और, इका करयाती, डी. एस. (2010). पेनगारुह पेवरना एक्सट्रैक केयर अलानी बावांग तिवारी (एल्यूथरीन अमेरिकाना मेर) तेरहादप मुदु सेलाई कुलित पिसांग केपोक (मूसा पैराडिसियाका लिन)। जर्नल टेक्नोलॉजी पर्टानिया।
- सेनगुप्ता, आर., बाजपेयी, आर., शुक्ला, एस. के., सिंह, एन., और सिंह, एन. (2025). बैठे रहने वाला काम और बढ़ती कमरबंद भारत में व्यावसायिक भूमिकाओं और पेट के मोटापे पर एक क्रॉस-सेक्शनल स्टडी। BMC पब्लिक हेल्थ-<https://doi-org/10-1186/s12889&025&21956&5>
- शेट, ए., बालचंदर, आर., वीरमगामी, ए., दवे, ए., राम, ई., खलील, जे., और ठाकोर, एम. (2026). समावेशी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल की ओर भारत की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को एक सामाजिक-पारिस्थितिक ढांचे के माध्यम से समझना। BMC स्वास्थ्य सेवा अनुसंधान। <https://doi-org/10-1186/s12913&025&13855&7>
- वी. बी. (2025). मैसूर. भारत में महिला स्ट्रीट वेंडर्स के बीच व्यावसायिक खतरे। इंटरनेशनल जर्नल फॉर

- मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च | <https://doi-org/10-36948/ijfmr-2025-v07i06-62644>
15. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। (2022). ऑक्यूपेशनल हेल्थ वर्कर्स— WHO- <https://www-who.int/news-room/fact-sheets/detail/occupational-health&health&workers>